भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए १६ से २२ नवंबर, २०१५ साप्ताहिक सलाह

(५३ वां मानक सप्ताह)

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/ जिले	नवंबर माह में वर्षा की स्थिति (मिली मी.)							साप्ताहिक सलाह
दिनांक	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	
पंजाब								
भटिंडा	0	0	0	0	0	0	0	सुबह के समय वातावरण में कोहरा विद्यमान रह सकता है। चूँकि दूसरी चुनाई का कार्य चल रहा है, इसलिए किसान भाई अपनी कपास के भण्डारण तथा विक्री के लिए सावधानी बरतें। किसानों को साफ-सुथरी कपास चुनने की सलाह दी जाती है। साफ-सुथरी और सामान्य कपास को सफ़ेद मक्खी से चिपचिपी हुई कपास से अलग रखें। दोनों प्रकार की कपास को न मिलाएँ। फसल में एक-तिहाई से ज्यादा गूलरों के खुलने पर सिंचाई न करें। सड़े हुए गूलरों से कपास नहीं चुनें। इसके साथ ही सुबह जल्दी कपास नहीं चुनें। सूक्ष्मजीवों के नुकसान से कपास को बचाने के लिए कपास को सुखाकर ही भण्डारित करें। कपास के डंठलों, फसल अवशेष तथा ग्रसित कपास का भण्डारण न करें। कपास की लकड़ियों/डंठलों व अन्य अवशेष को जलाने के स्थान पर कंपोस्ट बनाने के काम में लें।
फिरोजपुर	0	0	0	0	0	0	0	
मुकतसर	0	0	0	0	0	0	0	
मानसा	0	0	0	0	0	0	0	
हरियाणा								
सिरसा	0	0	0	0	0	0	0	
हिसार	0	0	0	0	0	0	0	
फ़तेहाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
राजस्थान								
हनुमानगढ़	0	0	0	0	0	0	0	
श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	
बांसवाड़ा	0	0	0	0	0	0	0	
उड़ीसा								फसल गूलर खुलने और चुनने की अवस्था में है। रस चूषक कीटों, *स्पोडोप्टेरा,* धब्बेदार तथा अमेरिकन सूँडियों का प्रकोप देर से बोई गई फसल पर देखा जा रहा है। लेकिन सिर्फ जैसिड संख्या ही आर्थिक हानि सीमा से ऊपर है। राज्य के कुछ हिस्सों में जीवाणु पत्ती झुलसा होग का संक्रमण देखा गया है। पूरी तरह खुले हुए गुलरों से ही तथा प्रातः 10.00 बजे के बाद ही कपास चुनें। शेष बचे हुए गूलरों की वृद्धि के लिए 0.75% पोटेशियम नाइट्रेट के साथ 1.5% डी.ए.पी. का फसल पर छिड़काव करें। पहली चुनी हुई कपास को अलग रखें तथा भण्डारण से पहले भली प्रकार सुखाकर ही कपड़े के साफ थैलों में भरकर रखें। रुई का संदूषण बचाने के लिए जूट के बोरों में कपास का भण्डारण करना टालें। गुलाबी सूँडी के प्रकोप की रोकथाम के लिए नवंबर अर्थात इस महीने में संश्लेषित पायरेथ्राइड का फसल पर छिड़काव करें।
कोरापुट	0	11	40	6	0	0	0	
कालाहांडी	0	8	35	0	0	0	0	
बोलांगीर	0	0	5	0	0	0	0	
गुजरात								
अमरेली	0	0	0	0	0	0	0	कई जिलों में कपास की पहली चुनाई पूरी हो चुकी है। सामान्य रूप से पहली चुनाई की कपास में गुलाबी सूँडी की क्षति कम होती है। सी.आई.सी.आर. द्वारा इस सप्ताह सौराष्ट्र में किए गए सर्वेक्षण से यह बात सामने आई कि जूनागढ़, अरमेली तथा भावनगर जिलों में अधिकांश किसानों ने बीटी कपास पर मोनोक्रोटोफ़ोस + एसीफेट का 3 से 4 बार छिड़काव किया है। इन कीटनाशकों के मिश्रण का फसल की प्रारंभिक अवस्था में छिड़काव करने पर नई
भावनगर	0	0	0	0	0	0	0	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	0	
वडोदरा	0	0	0	0	0	0	0	
राजकोट	0	0	0	0	0	0	0	
भरूच	0	0	0	0	0	0	0	

पाटन	0	0	0	0	0	0	0	हरी पत्तियों की वृद्धि को प्रेरित करता है। इसके परिणामस्वरूप फसल फलन अवस्था से पुनः वानस्पतिक अवस्था में चली जाती है और फसल की परिपक्वावस्था विलंबित हो जाती है। चूँकि नए फूल गूलर की सूँडियों को आकर्षित करते हैं जिससे सतत अनियमित पुष्पन के कारण कपास के खेतों में गुलाबी सूँडी का सतत अंतर्वाह विशेष रूप से मोनोक्रोटोफोस+ एसीफेट के कई छिड़काव किए गए खेतों में पाया गया है। ऐसे खेतों में दूसरी चुनाई के समय खुले हुए तथा हरे गुलरों में गुलाबी सूँडी का प्रकोप ज्यादा पाया गया है। जिन खेतों में किसानों द्वारा सी.आई.सी.आर. की परामर्शी के अनुसार नवंबर के प्रारंभ में संश्लेषित पाइरेथ्राइड का छिड़काव किया है वहाँ गुलाबी सूँडी का प्रकोप बहुत ही कम पाया गया। जिन खेतों में मोनोक्रोटोफोस + एसीफेट मिश्रण बार-बार छिड़काव नहीं किया गया वहाँ गूलरों का प्रस्फुटन समकालिक था तथा गुलाबी सूँडियों की संख्या भी कम थी। हरे गूलरों को गुलाबी सूँडी से आगे के ग्रसन से बचाने के लिए किसान भाई तुरंत एक छिड़काव साइपरमेथ्रिन अथवा फेनवॉलेरेट अथवा लेम्डा-साइहेलोथ्रिन का करें। ऐसा न करने पर गुलाबी सूँडी की नवंबर में भारी क्षति हो सकती है। कीटनाशक-मिश्रणों का प्रयोग कभी न करें। इससे सफेद मक्खी का प्रकोप बढ़कर चिपचिपी कपास की मात्रा बढ़ सकती है। किसानों को सलाह दी जाती है कि फसल को अगले महीने दिसंबर तक ही समाप्त कर दें। फसल को अगले वर्ष 2016 तक न ले जाएँ। ऐसा करना गुलाबी सूँडी के प्रकोप कम करने तथा बीटी कपास में गूलर की सूँडियों के प्रति प्रतिरोधकता को बढ़ाने से रोकने के लिए आवश्यक है। पिछले वर्ष के कपास के डंठलों व अवशेष के खेत की मेढ़ों पर ढेर लगे देखे जा रहे है। सभी फसल अवशेषों, ग्रसित कपास को भण्डारित न करें। फसल अवशेषों को जलाने के स्थान पर इसका विधिवत कंपोस्ट बनाया जा सकता है। घर अथवा भण्डार में रखा कपास का पुराना बीज गुलाबी सूँडी के पतंगों के वाहक का कार्य कर सकता है। यदि यह बीज क्षतिग्रस्त है तो इसे नष्ट कर दें। साफ-सुथरी कपास चुनें और इसे सुखाकर साफ कपड़े के थैलों में भण्डारित करें। कपास को संदूषण से बचाने के लिए जूट के बोरों का प्रयोग न करें।
सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	0	0	0	0	0	0	0	
मध्यप्रदेश								फसल पुष्पन, गूलर निर्माण तथा गूलर-प्रस्फुटन अवस्था में है। जैसिड तथा सफेद मक्खी का प्रकोप आर्थिक हानि सीमा से ऊपर तथा एफ़िड व फूलकीट की संख्या नगन्य है। कुछ छिटपुट स्थानों पर लाल पत्तीरोग देखा जा रहा है। पहली चुनी गई कपास को सुखाकर अलग से साफ कपड़ों के थैलों में भण्डारित करके रखें। रुई को संदूषण से बचाने के लिए जूट के बोरों का प्रयोग न करें।
खरगोन	0	0	0	0	0	0	0	
धार	0	0	0	0	0	0	0	
खंडवा	0	0	0	0	0	0	0	
महाराष्ट्र								
नागपुर	0	0	0	0	0	0	0	फसल परिपक्वावस्था में है। बीटी कपास में लाल पत्ती रोग देखा गया है। किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि वे लाल पत्ती रोग की निगरानी करते रहें और आवश्यक होने पर इसके प्रबंधन के उपाय करें। लाल पत्ती रोग के लिए संवेदनशील कपास के संकरों की पहचान करके उनकी खेती अगले वर्ष न करें। सूखाकाल तथा अधिक तापमान के कारण गूलर झड़न देखा जा रहा है। कुछ स्थलों पर सफेद मक्खी तथा एफिड की संख्या विशेषतः उन
वर्धा	0	0	0	0	0	0	0	
चंद्रपुर	0	0	0	0	0	0	0	
यवतमाल	0	0	0	0	0	0	0	
अमरावती	0	0	0	0	0	0	0	
अकोला	0	0	0	0	0	0	0	
बुलढाना	0	0	0	0	0	0	0	
परभणी	0	0	0	0	0	0	0	

नांदेड़	0	0	0	0	0	0	0	स्थानों/खेतों में बढ़ रही है जहाँ कीटनाशक मिश्रणों का प्रयोग किया गया है। बाजार में कपास का अच्छा भाव लेने के लिए साफ-सुथरी कपास चुनें। पिछेती फसल में संरक्षक सिंचाई यथासंभव दी जा सकती है। इसके साथ ही 2.0% यूरिया अथवा 2.0%डी.ए.पी. का पुष्पन अवस्था में फसल पर छिड़काव करें। हरे गूलर विकास अवस्था में 1.0% यूरिया के साथ 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट का फसल पर छिड़काव करें। कुछ स्थानों पर पत्ती धब्बा रोग देखा गया है। फिरोमोन ट्रैप का प्रयोग करके गुलाबी सूँडी की निगरानी करें। ट्रैप में पतंगों की पकड़ 8 पतंग प्रति ट्रैप प्रति रात्री सतत 2-3 रात्री की आर्थिक हानि सीमा पहुँचने पर सिफ़ारिश किए गए उपाय करें। बीजीI, बीजीII तथा गैर बीटी कपास में विशेष रुप से गुजरात के सीमावर्ती जिलों में तथा इसी वर्ष मार्च/ अप्रैल, 2015 तक पिछले मौसम की कपास की फसल खेतों में रखी गई थी उन खेतों में हरित गूलरों में क्षति की निगरानी भी करते रहें। साफ कपास की चुनाई तथा उसे सुखाने व साफ कपड़ों के थैलों में भण्डारण करना सुनिश्चित करें। रुई में संदूषण रोकने के लिए इस कपास को जूट के बोरों में भण्डारित न करें। कपास के डंठलों, फसल अवशेष तथा ग्रसित बीज को भण्डारित न करें। डंठलों तथा अवशेषों को जलाने के स्थान पर कंपोस्ट बनाएँ।
बीड़	0	0	0	0	0	0	0	
वासिम	0	0	0	0	0	0	0	
धुले	0	0	0	0	0	0	0	
जलगांव	0	0	0	0	0	0	0	
जालना	0	0	0	0	0	0	0	
औरंगाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
तेलंगाना								
आदिलाबाद	0	0	0	0	0	0	0	फसल पुष्पन से गूलर प्रस्फुटन अवस्था में है। कम नमी तथा दिन के अधिक तापमान के कारण पौधों के पीले पड़ने/मुरझाने/ सूखने तथा गूलरों के परिपक्वावस्था से पहले खुलने, आदि की समस्याएं बढ़ रही हैं। मृदा नमी कम होने से वृद्धि मंद हुई है तथा उथली मृदाओं में गूलरों का आकार छोटा रह गया है। भारी मृदाओं में फसल वृद्धि सामान्य है। पत्तियों के पीले और लाल होने की समस्या से निजात पाये के लिए 7 से 10 दिनों के अंतराल में दो बार फसल पर 2% यूरिया+1.0% मेग्नीशियम सल्फेट का छिड़काव करें। लंबी अवधी के लिए सूखा पड़ने के कारण उत्पन्न गूलर झड़न की रोकथाम के लिए 7 से 10 दिनों के अंतराल में दो बार प्लानोफिक्स 0.25मिली/लि. पानी+1-2%पोटेशियम नाइट्रेट का फसल पर छिड़काव करें। छिड़काव प्रात:काल जल्दी अथवा दोपहर बाद करें। डी.ए.पी. 1-2% अथवा 2.0% पोटेशियम नाइट्रेट जैसे पोषकतत्वों का फसल पर छिड़काव के माध्यम से 7 से 10 दिनों के अंतराल पर पुष्पन से गूलर विकास अवस्थाओं के मध्य दें। *राइजोक्टोनिया* जड़ गलन की रोकथाम के लिए कॉपर आक्सी-क्लोराइड @ 3.0ग्रा./लि. पानी की दर से इसका घोल प्रभावित पोधों की जड़ों में डालें। फफूँदजनित पत्ती धब्बा रोग की रोकथाम के लिए प्रोपिकान्जोल@1.0मिली./लि. अथवा मेन्कोजेब + कार्बेन्डेजिम @2.0ग्रा./लि. पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें। अधिक तापमान के कारण रस चूषक कीट और *स्पोडोप्टेरा* का प्रकोप देखा जा रहा है। इनकी रोकथाम के लिए परामर्शी के परिशिष्ट में सिफ़ारिश किए गए उपायों को अपनाएँ।
वारंगल	0	8	26	4	7	0	0	
खम्मन	0	23	25	4	7	0	0	
कारिंगर	0	8	20	0	3	0	0	
नालगोंडा	0	17	26	4	4	0	0	
आंध्रप्रदेश								
गुन्टूर	0	0	15	4	7	0	0	
प्रकासम	10	10	15	4	9	0	0	

कर्नाटक								
धारवाड़	0	8	0	7	13	17	7	अधिकांश कपास उत्पादक क्षेत्रों में तापमान कम है। अंत: बीटी तथा गैर बीटी कपास में लाल पत्ती रोग की रोकथाम के लिए पानी में घुलनशील 19:19:19 (1.0%) के साथ 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट का फसल पर छिड़काव करें। कुछ स्थानों पर चक्रवाती वर्षा द्वारा कपास की गुणता प्रभावित हुई है। अंत: ऐसी कपास को धूप में सूखने के बाद अलग से चुनकर इसे बेच दें। अगेती फसल में कपास चुनाई का कार्य पूरा हो चुका है। अंत: वृद्धि की नई बहार तथा कुछ फूल व गूलर लेने के लालच में फसल की सिंचाई न करें। सिंचाई करने से नाशीकीटों व रोगों की संख्या में वृद्धि होगी जो आगामी मौसम की नियमित कपास की फसल को दुष्प्रभित करेगा। देसी कपास उत्पादक जिलों के कुछ हिस्सों में देसी कपास की क़िस्मों में दहिया रोग (ग्रे मिल्ड्यू) का प्रकोप देखा जा रहा है। इसकी प्रभावी रोकथाम के लिए फसल पर कार्बेंडेजिम+मेंकोजेब (साफ) @ 2ग्रा./लि. पानी की दर से छिड़काव करें। जिन क्षेत्रों में अगेती फसल में कपास चुनने का कार्य समाप्त हो चुका है उन क्षेत्रों में सेलूलोज विघटनकारी जैवसंवर्धकों का उपयोग करके कपास फसल अवशेष का कंपोस्ट बनाएँ। अवशेष को जलाएँ नहीं।
हवेरी	0	11	0	8	13	17	4	
मैसूर	5	16	8	13	45	30	20	
तमिलनाडु								
पेरंबलुर	18	25	16	10	0	0	5	फसल प्रारंभिक गूलर निर्माण अवस्था में है। दूब घास (*साइनोडन डेक्टाइलोन*), गाजरघास (*पार्थेनियम*) तथा *ट्रायन्थेमा पोर्तुलाकेस्ट्रम* जैसे प्रमुख खरपतवारों की रोकथाम के लिए अंकुरण पश्चात प्रयोग होने वाले खरपतवारनाशकों का प्रयोग किया जा सकता है। उत्तर-पूर्व मानसून से प्राप्त होने वाले वर्षा जल का संरक्षण करने के लिए मृदा नमी संरक्षण उपाय करें। जैसिड तथा सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम दर्ज की गई है। *मायरोथीसियम* पत्ती धब्बा, जड़ गलन तथा मुरझान की समस्या से निपटने के लिए इनके प्रबंधन के उपाय करें। श्रीविलीपुत्तूर में शीतकालीन सिंचित फसल लगाई गई है। यहाँ मौसम ठंडा है तथा छिटपुट वर्षा हो रही है। फसल गूलर विकास अवस्था में है। *इकाइनोक्लोआ* प्रजाति, *डेक्टाइलोक्टेनियम एजप्शियम* जैसी घासें, *सायपेरस* प्रजाति (सेजिज), चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार *ट्राएंथेमा पोर्तुलेकेस्ट्रम, क्लिओम विस्कोसा, फायलेन्थेस मेडेरेसपेटेन्सिस* आदि के लिए सिफ़ारिश किए गए रोकथाम के उपाय अपनाएँ। रस चूषक कीटों, जैसिड, सफेद मक्खी, फूलकीट तथा तना घुन जैसे नाशीकीटों का प्रकोप दर्ज किया गया है। जड़ गलन रोग का प्रकोप भी रिपोर्ट किया गया है। तनाघुन तथा जड़ गलन की रोकथाम के लिए क्लोरपायरिफोस @ 2.0मिली. तथा बाविस्टिन@ 2.0ग्रा./लि. पानी की दर से इनका घोल प्रभावित पौधों की जड़ों में डालें।
विरडुनगर	53	16	21	19	11	10	18	
त्रिची	53	14	13	4	3	0	6	

	आदर्श वर्षा				
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	20-50	50-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

वैज्ञानिक	पता
डॉ. के.आर. क्रांति	निदेशक,केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ए. एच. प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक,एवं प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
डॉ. डी. मोंगा	प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,सिरसा (हरियाणा)
डॉ एस. बी. सिंह	प्रधान, फसल सुधार विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ब्लेज़ डी-सूजा	प्रधान, फसल उत्पादन विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
डॉ. एन अनुराधा	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)

प्रभारी वैज्ञानिक, मौसम विज्ञान विभाग (एआइसीएसटीआइपी केंद्र)

वैज्ञानिक		मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. पंकज राठोर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	09464051995	pankaj@pau.edu
डॉ. (श्रीमति) सुनीत पंधर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	009814513681	suneet@pau.edu
डॉ. संजीव कुमार कटारिया	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, आरआरएस, भटिंडा (पंजाब)		k.sanjeev@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार-124004 (हरियाणा)	09416325420	cotton@hau.ernet.in
डॉ. ऋषिकुमार	सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,सिरसा (हरियाणा)	09729106299	Rishipareek70@yahoo.in
डॉ. रूप सिंह मीना	स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान	09413024080	rsmeenars@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उड़ीसा-कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर-751003 (उड़ीसा)	09437321675	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृषि विश्वविद्यालय, नवासारी-396450 (गुजरात)	09662532645	girishfaldu@rediffmail.com
डॉ. ऐ. एन. पसलवार	पंजाब राव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला-440104 (महाराष्ट्र)	09822220272	adinathpaslawar@rediffmail.com
अरविंद डी. पंडागले	मराठवाडा कृषि विद्यापीठ, नांदेड़ (महाराष्ट्र)	07588581713	arvindpandegale@yahoo.co.in
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर-472002 (म.प्र.)	09406677601	aiccipkhandwa@gmail.com
डॉ. एस. भारती	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, एलएएम गुंटूर (आंध्रप्रदेश)	0949072341	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. अलादिकट्टी	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	09448861040	yraladakatti@rediffmail.com
डॉ. एम. वाय. अजयकुमार	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	09880398690	dr.my.ajay@gmail.com

डॉ. एस. सोमासुंदरम	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय कोयंबटूर (तमिलनाडु)	09965948419	rainfed@yahoo.com
डॉ. एम. गुनसेकरण	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कपास अनुसंधान संस्थान, श्रीविल्लीपुथुर (तमिलनाडु)	09443631359	gunasekaran.pbg@gmail.com

हिन्दी संसकरण:

डॉ. उल्हास नन्दनकर,
मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं
प्रभारी, हिन्दी अनुभाग,
केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)

-- इति --